

हिंदी कविताओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव

डॉ. राजेंद्र घोड़े

सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले
विश्वविद्यालय, पुणे

वर्तमान समय में वैश्वीकरण ने सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक, राजनीतिक शैक्षिक, साहित्यिक आदि सभी क्षेत्रों में बदलाव लाए हैं। यही बदलाव धीरे-धीरे व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन को बदल रहे हैं। क्योंकि परिवर्तन सृष्टि का नियम है। बहुत से बदलाव चीजों समय, सभ्यता तथा दैनंदिन जीवन में होते रहते हैं। इस बदलाव भरी भूमि को समकालीन रचनाकारों ने अपनी रचनाओं से अभिव्यक्त किया है। वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया से सकारात्मक और नकारात्मक बिंदुओं के निर्माण हो रहे हैं उन्हें कवियों ने कविताओं के माध्यम से उजागर किया है। साहित्य से वैश्वीकरण बाजारवाद, उदारीकरण, विश्वग्राम जैसे अनेक विषयों के अंतर्गत भिन्न-भिन्न पारिस्थितियों को भी मुखरित किया है। दरअसल कविता अपने समय की दस्तावेज होती है, जिसमें समय की गूँज सुनाई देती है। इसी को लेकर भगवत रावल कहते हैं- 'कविता काल निरपेक्ष और समाज निरपेक्ष नहीं होती। वह अपने समय में होती है और अपने समय के निशान उस पर मौजूद होते हैं।'। पूरे विश्व में जिस परिवर्तन या बदलाव को स्वीकृत किया गया है उसी को कवियों ने रेखांकित किया है। बढ़ते हुए वैश्वीकरण में आदमी मोबाईल, ई-मेल, कम्प्यूटर, क्रेडिट कार्ड आदि जीवन केंद्रित वस्तुओं से जुड़ा है। हर एक व्यक्ति का जीवन सुबह से लेकर श्याम तक कई वैश्विक वस्तुओं के आकर्षण में बीतते हुए दिखाई देता है। वे घर बैठे-बैठे इन वस्तुओं से रु-ब-रु होकर अत्यंत शीघ्र गति से उपयोग की कामना चाहते हैं। इसी वजह से वर्तमान में मानव के उपभोग के लिए चौबीसों घंटे बाजार अपना कार्य कर रहे हैं।

आज व्यक्ति वस्तुओं के उपयोग में इतना फँसा हुआ है कि जिस चीज की वह चाह रखता है वह उसे कुछ क्षणों में मिल जाती है। इसलिये हम कह सकते हैं कि आज महानगरों में बाजार विकसित हुए हैं, जिससे न घरों में न पंछी, न कुत्ते न बिल्ली मेहमान आते हैं बल्कि जो आते हैं वह तो केवल वस्तु बेचनेवाले एजेंट या वस्तुओं के पार्सल। ऐसी बढ़नेवाली वस्तु केंद्रित वृत्ति से कवि चिंतित होते हुए दिखाई देते हैं।

बाजार ने व्यक्ति को खरीदार तो काया ही है लेकिन उसके दिमाग पर भी अधिकार बनाया है। व्यक्ति की हर एक जरूरत को किस रूप में पूरा किया जा सकता है, उसके अनेक पर्याय बाजार में उपलब्ध या खुले किए गए हैं। वर्तमान में हर वस्तु चीज को बाजार में अपने नियंत्रण में लिया है। बाजार ने आज लुभावने सपनों से व्यक्ति को चीजों का जरूरतमंद बनाया है। इस नई मनोवृत्ति के प्रति कवयित्री रंजना जायसवाल 'बाजार-एक' कविता के माध्यमले कहती है-

‘पहले वे
जरूरत पैदा करते हैं
शुरू-शुरू में पूरी भी करते हैं
जरूरतें पर ओदी बनते ही
तटस्थ हो जाते हैं
फिर रह जाता है
आदमी
अभाव में छटपटाता।’²

इस प्रकार की विचारधारा को बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने बढ़ाकर नई-नई

आवश्यकताओं को जन्म दिया है, जैसे सुबह नहाने के साबुन से लेकर रात सोने के गुड़ नाईट तक भिन्न-किन जरूरतों को निर्माण किया है। इन आवश्यकताओं के कारण व्यक्ति इन चीजों, वस्तुओं को अपने शरीर का अंग समझने लगा है, जिसके न होने से वह निराश, बेचैन हो उठता है। चीजें व्यक्ति की जरूरतों के अनुसार सेवा प्रदान सेवा प्रदान करती हैं किंतु इन सेवाओं के अभाव में व्यक्ति स्वयं को हताश महसूस करता है।

वर्तमान मानव जीवन के सभी पहलु केवल यंत्रवत साधनों उपकरणों से जुड़े हुए हैं। इस नई सभ्यता हमें नई उद्भावनाओं का सामना करना पड़ रहा है। इस संदर्भ में से कवि भगवत रावल 'बैलगाड़ी' कविता में इसी समस्या को लेकर लिखते हैं-

“एक दिन अपनी ही चमक-दमक की
रफ्तार में परेशान सारे के सारे वाहनों के लिए
पृथ्वी पर जगह नहीं रह जाएगी।”³

मानव जीवन की सुख-सुविधाओं के लिए भिन्न-भिन्न कार्पोरेट कंपनियों इन उपकरणों साधनों को अधिक मात्रा में निर्मित कर रहे हैं। आज कई व्यक्तियों के पास एक से अधिक मोटार गाड़ियों की संख्या दृष्टिगत होती है, ये केवल वैश्वीकरण की देन हैं। इनसे आगे चलकर भविष्य में निर्माण घेवा मुसीबतों को लेकर कवि चिंतनशील बने हैं। लुभावने सपने दिखाकर बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक मुनाफा कमाना चाहती हैं। बाजार में कौन-सी चीज ना रूप में आकर उभरकर आ सकती है, इसका कोई अंदाजा नहीं होता। लेकिन सब मनुष्य उन चीजों के प्रति आकर्षित रहते हैं।

वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता से एक नई विश्व क्रांति का स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, ई-मेल, जैसे उपकरणों की उपयुक्तता को लेकर आम आदमी भी गुलाम हो गया है। क्योंकि यह सभी उपकरण आधुनिक मनुष्य की जरूरतें बन गई हैं। वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में अपना अस्तित्व कायम किया है जैसे कि- व्यापार उद्योग, मनोरंजन, वस्तुएँ, शिक्षा डाक आदि। वैश्वीकरण की वैज्ञानिक एवं यांत्रिक नीतियों से मानव जीवन के लक्ष्य, मूल्य व्यक्तित्व आदि में अभूतपूर्व परिवर्तन होते हुए दिखाई देती है। वैज्ञानिकता एवं यांत्रिकता से नकारात्मक पहलू भी सामने दिखाई देते हैं। इसको लेकर भी कवि जनता का ध्यान आकर्षित करता चाहते हैं। 'यह भागता शहर' इस कविता के माध्यम से कवयित्री रंजना जायसवाल वास्तविकता प्रकट करती है। वह कहती है-

यहाँ रोमांच है, रोमांस नहीं
देह है, आत्मा नहीं
सब कुछ कृत्रिम
मशीन से संचालित
पेड़-पत्ते और फल-फूल
पशु-पक्षी सब
यहाँ तक कि आदमी
मुश्किल है पहचान असल की
नकल ज्यादा वास्तविकता लगती है यहाँ।”⁴

मानव की आंतरिक संवेदनाओं की मृत्यु होकर केवल मशीनी जीवन बना है। यांत्रिकला के लाभ में असल की जगह नकल ही वास्तविक लग रही है। विश्व क्रांति के दौर में वैज्ञानिकता और यांत्रिकता के कारण मानव जीवन के लिए जितने लाभ हुए हैं उतनी हातियाँ भी बढ़ती हुई दिखाई दे रही हैं।

वर्तमान समय में हर एक हर एक क्रिया का काम विज्ञान, तंत्रज्ञान के द्वारा अधिक मात्रा में हो रहा है। हर एक आदमी अपने श्रम, अर्थ, समय की गति पर नियंत्रण करने हेतु इन साधनों का गुलाब बनना पसंद करता है। उसे केवल फल और परिणाम की आवश्यकता है। इसलिये हर पल वह इन तकनीकी साधनों से जुड़ता रहता है। इस स्थिति को लेकर कवि ज्ञानेंद्रपति 'कदम-कदम पर' इस कविता के माध्यम से यंत्रवत स्थिति के दर्शन को व्यक्त करते हुए कहता है-

**“कितने कदमों का है यह शहर
इसका पूरा ज्युग्राफिया है मौजूद
चमकते शांतिर खस्वाट के भीतर।”⁵**

तकनीकी विज्ञानवादी युग में बड़े-बड़े शहरों को भौगोलिकता से अधिक छोटे छोटे नक्षों में रूपांतरित किया है। आज समुचे विश्व को तकनीकीने सीमित किया है।

विज्ञान और तकनीकी से विध्वंसक और भयानक रूप भी प्रस्तुत होते हैं। आदमी अधिक से अधिक लाभ लेने हेतु स्वयं के जीवन से खेल रहा है। इस बढ़नेवाली अमानवीयता को लेकर कवि ज्ञानेंद्रपति 'बीज-व्यथा' कविता में कहता है-

‘रासायनिक खादों और कीटकनाशकों के जहरीले संयंत्रों की आयतित तकनीक आती है पीछे-पीछे तुम्हारा घर उजाडकर अपना घर भरनेवाली आयतित तकनीक यहाँ अन्न-जल में जहर भरनेवाली कहर ढानेवाली बगैर कुहराम’⁶

कवि बीज उत्पादन तकनीक के माध्यम से होनेवाले दुष्प्रभाव को अभिव्यक्त करते हैं कि जितनी अधिक मात्रा में हम कृत्रिमता के हथकंडे अपना रहे हैं, उतनी अधिक मात्रा में नई-नई तकनीकों का विस्तार हो रहा है। यह नीति व्यक्ति, समाज और राष्ट्रों को उजाकर अधिक मुनाफे के साथ जुड़ी है। विज्ञान और तकनीक मनुष्य जीवन के सृजनात्मकता और सापेक्षता की पहचान बने हैं लेकिन वर्तमान दौर में बदली हुई मानसिकता में अर्थ, लाभ की शक्ति कार्य कर रही है।

विश्व भर में आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या अधिक तीव्र हुई है। आज हर कोई व्यक्ति स्वार्थ से इतना क्रूर बना है कि वह पृथ्वी और प्रकृति की तमाम चीजों पर अधिकार पाकर उसे प्रदूषित कर रहा है। पर्यावरण के जंगल, पेड़, नदी, पशु, पंछी सभी से मानव अपना खेल खेल रहा है। इस स्थिति को निर्मला पुतुल अपनी कविता 'बूढ़ी पृथ्वी का दुःख' के माध्यम से व्यक्त करती है

**‘क्यों होती है
तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है
जब कोई पेड़ धरती पर’⁷**

विकास का आधार लेकर पृथ्वी पर से पेड़ों की बड़ी मात्रा में कटाई हो रही है। पेड़ों से मनुष्य के जीवन के लिए प्राणवायु मिलता है। इसी सवाल को लेकर कवयित्री कहती है कि क्या खुद के ही जीवन से एक तरह से खेलना यह कैसा व्यवहार है। जब पेड़ कट जाता है तो कोई दुःख नहीं होता।

वैश्वीकरण के युग में भौतिक सभ्यता, शहरीकरण के नामपर प्राकृतिक जीवन को तहस-नहस किया जा रहा है। हमारी प्राकृतिक जरूरतों को मिटाया जा रहा है। हमारा जीवन जिन चीजों पर टिका हुआ

है वह वर्तमान युग के भौतिक सभ्यता, सहरीकरण हे द्वारा प्रदूषित हो रहा है। भौतिक औद्योगिक क्रांति का गहरा दुष्प्रभाव पर्यावरण पर हुआ है। आज शहरीकरण और भौतिक सभ्यता के लिए इन मशीनीकृत राक्षसों में प्राकृतिक जीवन के सभी पहलुओं को मिटाया है। पर्वत, पहाड़, पशु, पंछी, पेड़ को क्रसरों और बारूदों के द्वारा उजाड़ा जा रहा है।

समाज में जिस तरह विकास बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है ठीक उसी प्रकार अपराध, भय, घृणा का प्रतिशत भी बढ़ता जा रहा है। आज आदमी का जीवन तनाव, पीड़ा, नैरास्य से भरा हुआ दिखाई दे रहा है। तनाव भरी जिंदगी में जीवन जीते-जीते व्याकन विस्थापित हो रहा है। किसी भी जगह जाए वहाँ पीड़ा का भाव बना रहता है। इस पीड़ा से अपना संसार उठाकर अन्य जगह डेरा बसाते हैं, लेकिन पुनः उस स्थिति का सामना करते-करते वे अपनी खुद की पहचान भी खोते हैं। इस स्थिति पर मंगलेश डबराल 'दुःख' कविता में दर्शाते हैं-

**‘लोग छोड़कर जाते हैं घर-द्वार
अनजान दनिया में भटकले निरुद्देश्य
रोटी के बदले में बदल देते हैं
अपने नाम और विचार’⁸**

तनाव के बिखराव में आदमी अपनी पहचान खो रहा है। खुदकी पहचान छुपाने के लिए नकली मुखौटे का प्रयोग कर रहा है। इस तनाव भरी जिंदगी में आम आदमी सुख, समाधान के लिए बिखराव भरा जीवन जी रहा है।

अतः हम कह सकते हैं कि व्यक्ति को वैश्वीकरण ने कई सुविधाएँ दी हैं लेकिन उससे व्यक्ति ने जीवन के आनंद को हाशिए पर रख दिया है। भौतिक सुविधाओं की लालसा से वे अपने सेहत स्वास्थ्य के प्रति उदासीन या लापरवाह दिखाई रहे हैं। व्यक्ति आत्मीय प्रेम के लिए जुझ रहा है। मूल्य परिवर्तित होकर उपभोग के मूल्य बन गए हैं और सच्ची आत्मीयता, प्रेम, समन्वय के रिश्ते भी अनजान हैं। शाश्वत होते गए हैं। वैश्वीकरण की स्थितियों से आम आदमी के अस्तित्व, संघर्ष, वर्तमान दशा और दिशाओं का प्रभाव हिंदी कविताओं में साफ झलकता हुआ दिखाई देता है।

संदर्भ सूची -

1. कवि एकादश, संपा. लीलाधर मंडलोई एवं अनिल जनविजय, मेधा बुक्स, दिल्ली संस्करण- 2008, पृ.140
2. जिंदगी के कागज पर, रंजना जायसवाल शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2009, पृ.78
3. ऐसी कैसी नींद, भगवत रावत, वाणी प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2004 पृ.12
4. जिंदगी के कागज पर, रंजना जायसवाल शिल्पायन प्रकाशन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2009, पृ.80
5. संशयात्मा, ज्ञानेंद्रपति, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 2004, पृ.33
6. वही, पृ.170
7. नगाड़े की तरह बनते शब्द, निर्मला पुतुल, भारतीय ज्ञानपति इन्स्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली युवक संस्करण 2005, पृ.31
8. आवाज भी एक जगह है, मंगलेश डबराल, वाणी प्रकाशन शन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 2000, पृ.50